हड़प्पा सभ्यता और ऋग्वैदिक युग

- हड़प्पा सभ्यता के पतन के साथ ही एक नई संस्कृति का पदार्पण होता है जिसे वैदिक संस्कृति कहा जाता था। इसे वैदिक युग कहा जाता है क्योंकि इसका इतिहास लेखन मुख्य रूप से वैदिक ग्रंथों पर आधारित है। अर्थात वैदिक ग्रन्थ इस संस्कृति के मुख्य ऐतिहासिक स्त्रोत हैं.
- वैदिक साक्ष्यों से मिले सन्दर्भों के आधार पर वैदिक संस्कृति और उनके लोगों को हड़प्पा सभ्यता से जोड़कर देखा जाता है.
- बोगाजकोई शिलालेख जिसमें 4 वैदिक देवताओं इंद्र, वरुण, मित्र और नासत्यस का उल्लेख है, जिससे उनके मध्य एशिया निवासी सम्बन्धी अवधरणा मध्य एशियाई सही साबित होती है।
- इसे मध्य एशिया और तिब्बत के बीच सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र के रूप में जाना जाता है। वेदों की रचना सप्त सैंधव क्षेत्र में हुई।

- "बोगाजकोई" शिलालेख (14 वीं शताब्दी ई.पू. के) की खोज में ऋग वैदिक देवताओं का उल्लेख है जिसका अर्थ है कि ऋग्वेद पहले अस्तित्व में था और वैदिक संस्कृति उस प्रारंभिक युग में भारत से एशिया माइनर में चली गई थी।

ऋग्वैदिक और हड़प्पा सभ्यताओं के बीच समानताएं: -:-

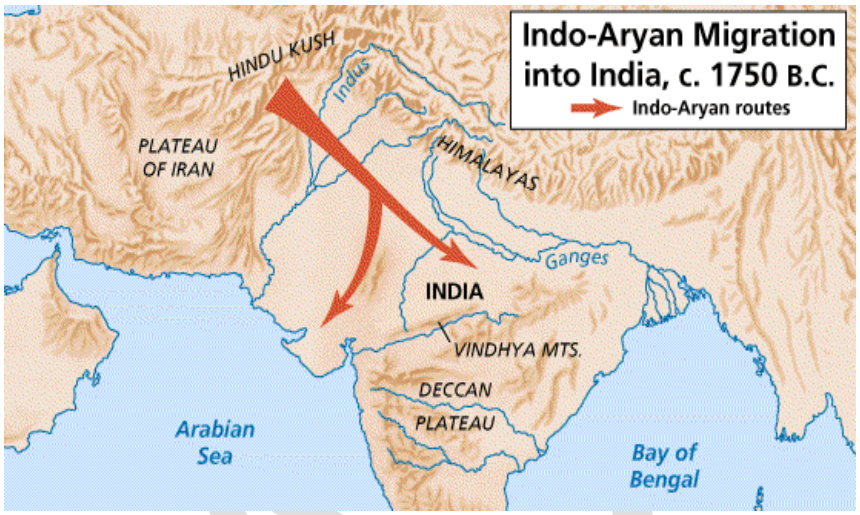
- हड़प्पा स्थलों का भौगोलिक वितरण ऋग्वैदिक स्थलों के समान ही है।
- ऋग्वेद में वर्णित भौगोलिक विशेषताएं, उत्तर में अफगानिस्तान से लेकर दक्षिण में गुजरात तक वैदिक सभ्यता के विस्तार की पुष्टि करती हैं, पूर्व में गंगा और पश्चिम में कुभा (काबुल)।
- मुख्य तौर पर ऋग्वेद सभ्यता सरस्वती नदी पर केंद्रित थी, जो अब राजस्थान के रेगिस्तान में खो गई है। ऋग्वेद में काबुल, स्वात, कुर्रम, गुमल, सिंधु, झेलम, चिनाब, रावी, ब्यास और सतलज आदि नदियों का उल्लेख है, जो साबित करती हैं कि वैदिक स्थल अफगानिस्तान और पंजाब में अवस्थित थे।
- सिंधु लोगों द्वारा रखे जाने वाले पालतू जानवरों को ऋग्वेद में भी जाना जाता था, जिनमें भेड़, कुत्ता, भैंस, बैल आदि शामिल हैं।
- लोथल से घोड़े का पक्की मिटटी की मूर्ति मिलती है। वैदिक काल में घोड़ा एक महत्वपूर्ण जानवर था।
- हड़प्पा लोगों की धार्मिक प्रथाएँ जैसे पीपल के पेड़, बैल, शिव-लिंग की पूजा आदि भी वैदिक युग में मौजूद थी।
- ऋग्वेद में सोने और अयस (तांबा) के उपयोग का उल्लेख है। । हडप्पा काल में भी बर्तन बनाने में अयस का उपयोग किया जाता था।
- हड़प्पा के टेराकोटा (पक्की मिट्टी की मुर्ति) में महिषासुर वध के दृश्य को दर्शाया गया है, जो महिषासुरमर्दिनी की याद दिलाता है।

ऋग्वेद के रचनाकार स्वयं को आर्य बताते हैं.

- आर्य शब्द की उत्पत्ति "अर" से हुई है जिसका अर्थ है खेती करना।

आर्यों का आक्रमण: -

- आर्य शब्द संस्कृत शब्द "आर्य" से उत्पन्न हुआ है, मूल रूप से एक जातीय स्व-पदनाम है और शास्त्रीय संस्कृत में इसका अर्थ है- "सम्माननीय, सम्मानजनक, और महान"।
- आर्यों का मूल निवास एक बहस का विषय है और इसके पीछे कई तर्क हैं। विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न क्षेत्रों की पहचान आर्यों के मूल निवास के रूप में की है। उनमें आर्कटिक क्षेत्र, जर्मनी, मध्य एशिया और दक्षिणी रूस शामिल हैं।



अभी भी आर्यों के मूल निवास का कोई प्रमाण नहीं है और इस मुद्दे पर विभिन्न सिद्धांत प्रस्तुत हैं। ये विभिन्न सिद्धांत इस प्रकार हैं: -

	यूरोपीय सिद्धांत
विद्वान	सर विलियम जोन्स (1786)
यूरोप महाद्वीप आर्यों के की भूमि है, उदाहरण के लिये संस्कृत के शब्द मातृ और पितृ लैटिन लैटिन मैटर और पेटर के समान हैं। इसी प्रकार, हितित (तुर्की) भाषा का *इनार* वैदिक इंद्र के समान है।	

मध्य एशियाई सिद्धांत	
विद्वान	**मैक्स मुलर**
'H'/'ह' और S/'स' 'के बीच का अंतर-परिवर्तन और hepta hindu का Sapta Sandhanv (सप्त सिंधु), Ahura (asura) /असुर, haoma (soma)/सोम, daha (dasa)/दास इस दावे को और पुष्ट करते हैं।	

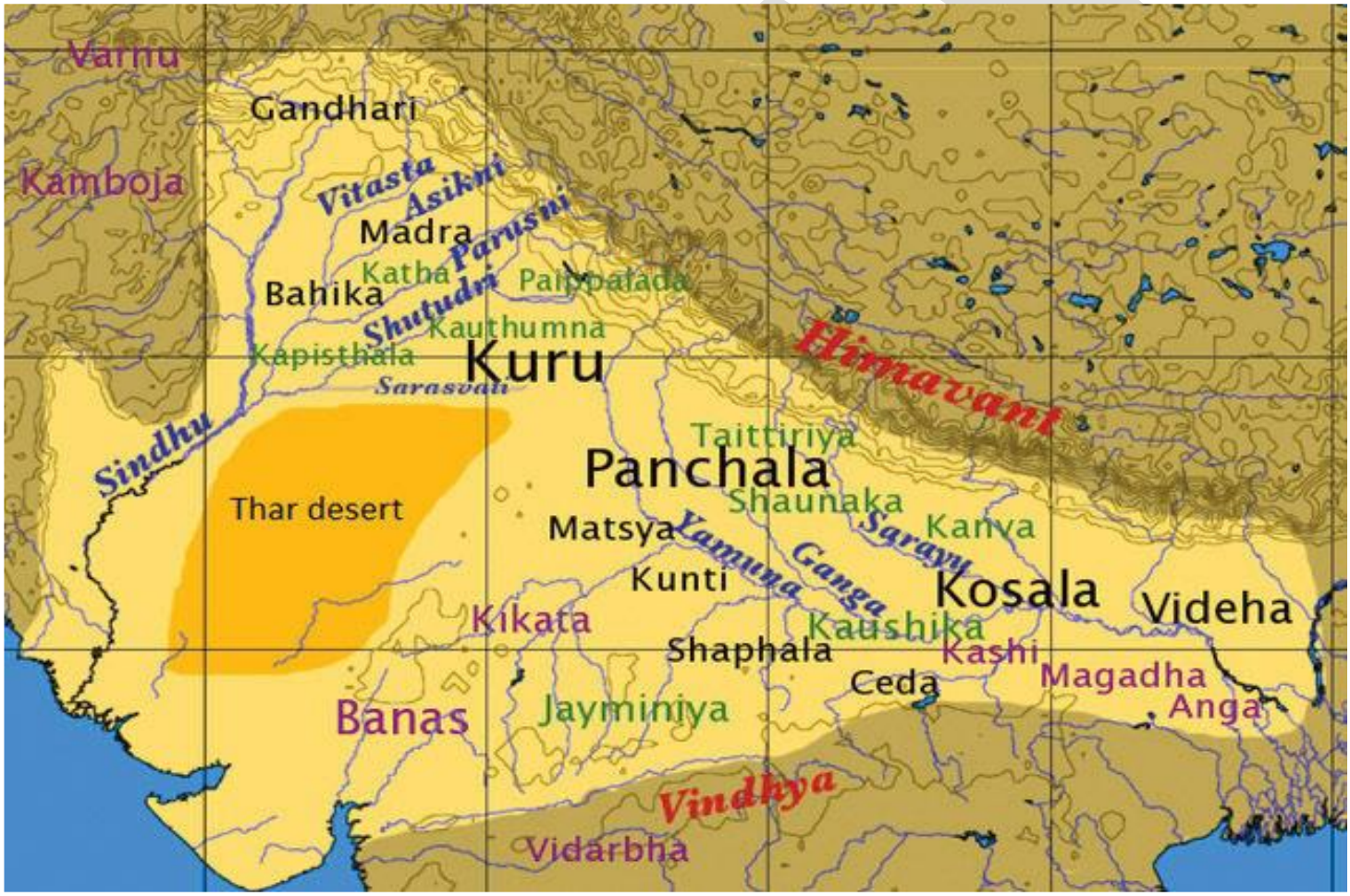
आर्कटिक क्षेत्र सिद्धांत	
विद्वान	**बाल गंगाधर तिलक**
मूल घर उत्तरी आर्कटिक क्षेत्र है, क्योंकि वेद प्रत्येक 6 महीने के लंबे दिन और लंबी रातों के बारे में बताते हैं, जो केवल आर्कटिक क्षेत्र में होता हैं।	
भारतीय सिद्धांत	
विद्वान	**डॉ सम्पूर्णानंद और ए सी दास**

वेद एक निश्चित साहित्यिक साक्ष्य हैं कि आर्यों ने सप्त सिंधु को अपना मूल घर माना था।

|

तिब्बत का सिद्धांत	
विद्वान	**स्वामी दयानंद सरस्वती**
वेदों और अन्य आर्य ग्रंथों के संदर्भ में तिब्बत को आर्यों का मूल निवास माना गया है।	

वैदिक काल मानचित्र



प्रारंभिक आर्य सप्त सिंधु की भूमि में रहते थे, और संभवतः घोड़े के रथ और बेहतर सैन्य तकनीक के उपयोग के कारण, वे इस क्षेत्र में अपना राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित कर सके ।

आर्य आक्रमण सिद्धांत के सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ

आर्य आक्रमण सिद्धांत बताता हैं कि भारतीय उपमहाद्वीप में शुरुआती बस्तियां एक मिथक है और दक्षिण एशिया में पाई जाने वाली आनुवंशिक विविधता इनसे 3,500 वर्ष से अधिक पुरानी है। उस काल मे इंडो-आर्य भारत में आये थे।इस सिद्धांत का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक निहितार्थ यह था कि इसने यह स्पष्टीकरण दिया कि उत्तर भारतीय आप्रवासी हैं और द्रविड़ लोग भारत के मूल निवासी हैं। इसने समाज में निम्न और उच्च जातियों के बीच की खाई को भी जन्म दिया और 19 वीं शताब्दी के बाद से पश्चिमी और दक्षिणी भारत में निम्न जाति के आंदोलनों का नेतृत्व किया।

वैदिक सभ्यता (वैदिक युग)

वैदिक सभ्यता के बारे में जानकारी का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत वैदिक साहित्य है। इसे ज्ञानकोष के रूप में वर्णित किया गया है जो हजारों वर्षों से वैदिक इतिहास का स्तम्भ बना हुआ है और इतने वर्षों से मानवता को सही मार्ग दिखा रहा है।

वैदिक साहित्य को आमतौर पर प्रारंभिक वैदिक और उत्तर वैदिक साहित्य में विभाजित किया गया है:

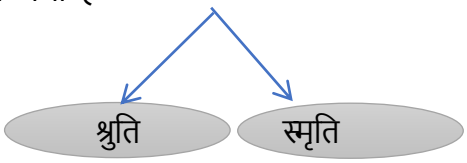
1. **प्रारंभिक वैदिक साहित्य / ऋग्वैदिक संस्कृति (c 1500–1000 ई.पू.)**
2. **उत्तर वैदिक साहित्य / उत्तर वैदिक संस्कृति (c 1000–500 ई.पू.)**

वेद: -

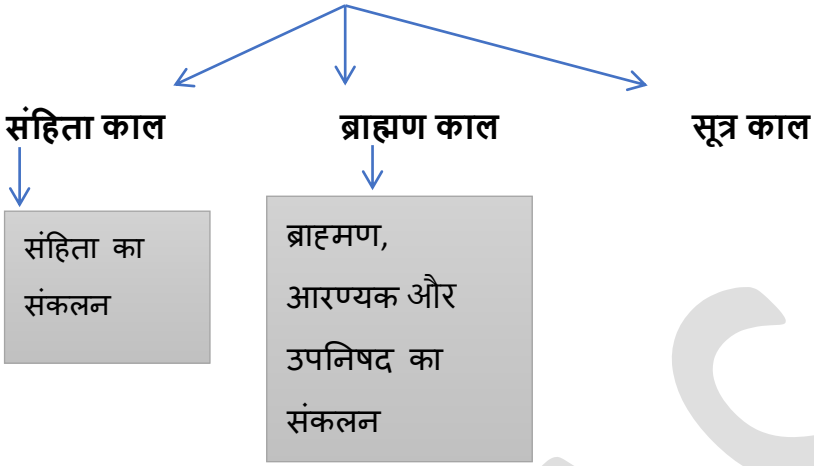
वेद मूल शब्द 'विद' से लिया गया है 'विद', अर्थ "जानना"



- वेदों को "अपौरुषेय" कहा जाता है जिसका अर्थ मनुष्य द्वारा निर्मित नहीं किया गया है, ये दिव्य हैं।
- वेदों को श्रुति का दर्जा दिया गया है (जिन्हे सुनाया जाता था) और कई शताब्दियों तक मौखिक रूप से हस्तांतरित किया गया है। कालांतर में इनका संकलन किया गया और सबसे पुरानी जीवित पांडुलिपि 11 वीं शताब्दी की है।
- वैदिक साहित्य को दो भागों में बांटा गया है -



❖ **वैदिक साहित्य को आमतौर पर तीन अवधियों में विभाजित किया गया है: -**



❖ **ये तीनों काल क्रमागत हैं**

वेद (वैदिक संहिता) संख्या में चार हैं: -

1. ऋग्वेद - श्लोकों/ मन्त्रों का संग्रह
2. सामवेद - अधिकतर ऋग्वेद से लिए गए मन्त्रों का संग्रह
3. यजुर्वेद - यज्ञीय सूत्रों का संग्रह
4. अथर्ववेद - मंत्रों और श्लोकों का संग्रह

❖ प्रत्येक वेद में सामान्यतः चार भाग होते हैं:

- **संहिता**
- **ब्राह्मण**
- **आरण्यक**
- **उपनिषद**

ऋग्वेद में केवल पहले तीन वेदों के संदर्भ हैं, जो बताते हैं कि चौथे वेद की रचना बाद के कुछ काल में हुई थी।

❖ वेद मंत्रों, वंदना, श्लोकों और यज्ञ अनुष्ठान का संग्रह हैं।

❖ "ऋषि" जो इन ग्रंथों के रचियता थे, उन्हें "मंत्रद्रष्टा" के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ है प्रबुद्ध संत, जिन्हें सीधे सर्वोच्च रचनाकार से श्लोक प्राप्त हुए।

1. ऋग्वेद: -

- ऋग्वेद 1028 श्लोकों का एक संग्रह है, जो 10 मंडलों में विभाजित है।
- मुख्यतः ऋग्वेद की रचना सप्त-सिंधु क्षेत्र में की गई थी।
- वे भारत में प्रारंभिक वैदिक लोगों के जीवन का चित्रण करते हैं। सबसे पुराना वेद ऋग्वेद है, जिसकी रचना लगभग 3500 साल पहले हुई थी।
- प्रसिद्ध गायत्री मंत्र ऋग्वेद से ही प्राप्त होता है।
- II से VII मंडल को वंश ग्रन्थ के रूप में जाना जाता है क्योंकि वे विशेष तौर पर ऋषियों के वंश के बारे में वर्णन करते हैं।
- हाल ही में, ऋग्वेद को यूनेस्को द्वारा विश्व मानव विरासत को सूचित करने वाले साहित्य की सूची में शामिल किया गया है।
- ऋग्वेद में ज़ेंद अवेस्ता के साथ कई चीजें समान है, जो ईरानी भाषा का सबसे पुराना ग्रन्थ है। ज़ेंद अवेस्ता में सप्त सिंधु शब्द का उल्लेख है।
- 1600 ई.पू. के कास्साइट शिलालेखों में कुछ आर्य के नाम वर्णित है और 1400 ई.पू. में इराक में पाया गया मितानी शिलालेख बताता है कि ईरान से आर्यों की एक शाखा पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ी।

  - मंडल **VIII** - अधिकांशत कण्व परिवार से संबंधित हैं।
  - मंडल **IX** - सोम मंत्रों का संकलन।
  - मंडल **I** तथा **X** - इसमें पुरुषसूक्त है, जो चार वर्णों की व्याख्या करता है.
  - *आयुर्वेद ऋग्वेद का उपवेद है।*(स्वास्थ्य और चिकित्सा विज्ञान)

2. *साम वेद: - (मंत्रों की पुस्तक)*

- सामवेद ज्यादातर ऋग्वेद से लिए गए श्लोकों का संग्रह है, लेकिन गायन की सुविधा के लिए एक काव्यात्मक रूप में व्यवस्थित किया गया है।
- यह *1,810* श्लोकों का संग्रह है।
- यह संगीत का पहला ग्रन्थ है।
- इन श्लोकों को उद्गात्री नामक ब्राह्मणों के एक विशेष वर्ग द्वारा' सोम यज्ञ में गाया जाता था।
- यह प्रत्येक श्लोक की लय और धुन से संबंधित है।
- वेद के शक *(पुनर्वसु)* कौथुमा, जैमिनि और रणयनीय हैं।

  - *सामवेद में प्रसिद्ध ध्रुपद राग शामिल है, इस राग को बाद में तानसेन ने गाया था।*
  - *सामवेद का उपवेद गंधर्ववेद है। (संगीत का विज्ञान)*

3. *यजुर्वेद*: -

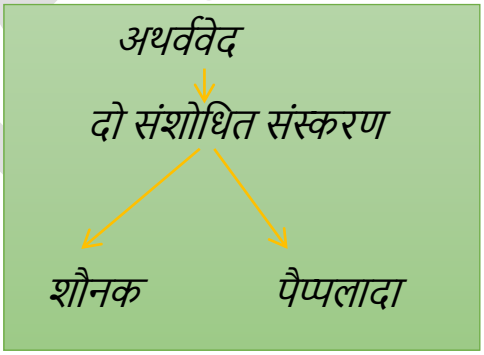
- यजुर्वेद अनुष्ठानों के प्रदर्शन के लिए प्रक्रिया से संबंधित है। ग्रंथों को आगे विभाजित किया गया है:

शुक्ल यजुर्वेद / श्वेत यजुर्वेद / वाजसनेय	कृष्ण यजुर्वेद
❖ इसमें केवल मंत्र हैं। ❖ इसमें 2 पुनरावृत्तियाँ शामिल हैं: - →1) माध्यन्दिन →2) कण्व	❖ इसमें मंत्र और गद्य स्पष्टीकरण दोनों शामिल हैं। ❖ इसमें 4 पुनरावृत्तियाँ हैं → कथक → मैत्रायणी → तैत्रीय, → कपिष्ठल

- यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद है। (युद्ध का विज्ञान)
- "अध्वर्यु" - यज्ञ की व्यवस्था में काम करने वाले ब्राह्मणों को यज्ञ के समय अनुष्ठान करना होता था।

4. *अथर्ववेद*: -

- अथर्ववेद जादू तंत्र और मंत्र का एक संग्रह है। यह अंतिम वेद है और *711* श्लोकों के साथ *20* भागों में विभाजित एक गैर-आर्य रचना मानी जाती है।
- यह बुरी आत्माओं और बीमारियों से मुक्ति प्रदान करता है।
- यह वेद गोपथ ब्राह्मण से सम्बंधित है।
- अथर्ववेद का उपवेद शिल्प वेद है।



ब्राह्मण साहित्य: –

- ब्राह्मण साहित्य ने बलि समारोहों के प्रदर्शन के नियमों का वर्णन किया है।
- वे वेदों के श्लोकों को रूढ़िवादी तरीके से समझाते हैं।
- प्रत्येक वेद में कई ब्रह्मण जुड़े हुए हैं।
- सबसे महत्वपूर्ण ब्राह्मण शतपथ ब्राह्मण है, जो यजुर वेद से जुड़ा हुआ है और जो सबसे अधिक काफी विशाल है । यह एक सौ पवित्र पथ" का सुझाव देता है।

शतपथ ब्राह्मण - इसमें बताया गया है, कैसे राजा विदेही माधव ने सरस्वती क्षेत्र (वैदिक संस्कृति की भूमि) से पलायन किया, कोसल की पूर्वी सीमा सदानीरा (आधुनिक गंडक नदी) को पार किया, और विदेह (आधुनिक तिरहुत) की भूमि पर आए। यह ग्रंथ तीन राज्यों, कोसल, कासी और विदेह के विकास की व्याख्या करता है।

वेद और उनके ब्राह्मण		
1.	ऋग्वेद	ऐतरेय और कौशीतकी
2.	साम-वेद	तांड्य और जैमिनी
3.	यजुर-वेद	तत्तिरिया और सतपथ
4.	अथर्व-वेद	गोपथ

आरण्यक: -

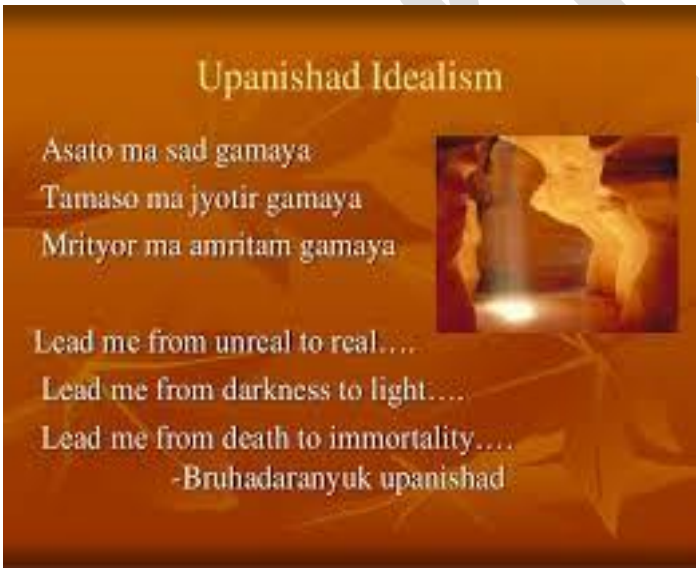
- 'उन्हें' वन पुस्तकें कहा जाता है।
- वे रहस्यवाद और दर्शन से जुड़ा हैं और बलिदान /अनुष्ठान का विरोध करते हैं।
- अरण्यक ब्रह्माणों के अंतिम भाग हैं। यह संस्कारों, अनुष्ठानों और बलिदानों पर अधिक जोर नहीं डालता है, लेकिन केवल दर्शन और रहस्यवाद को समाहित करता है।

आरण्यक

- सचमुच, इसका अर्थ है 'जंगल'।
- नैतिक विज्ञान और दर्शन का विवरण प्रदान करता है
- उन भिक्षुओं और संतों का विवरण प्रदान करता है जो जंगलों में रहते थे
- ध्यान पर तनाव देता है।
- 'यज्ञों' की प्रणाली का विरोध करता है।
- 'उन्हें' वन पुस्तकें कहा जाता है।

❖ *उपनिषद:* -

- उपनिषदों को रहस्यवादी लेखन के रूप में वर्णित करना उचित होगा। कुल 108 उपनिषद हैं, उनमें से सबसे प्रमुख हैं, प्रसन, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, कठौपनद, ईशोपनिषद, ब्राह्यदारण्यक, आदि।



- 108 *उपनिषद हैं, जिनमें से* 13 *सबसे प्रमुख हैं।*
- 'उपनिषद 'आत्मा' और' ब्रह्म 'पर आधारित हैं।
- उपनिषद जीवन, ब्रह्मांड, आत्म, शरीर, मृत्यु आदि के दर्शन पर केंद्रित हैं।

- उपनिषद का शाब्दिक अर्थ है किसी के पास बैठना'।

'माण्डूकोपनिषद'

राष्ट्रीय प्रतीक का "सत्यमेव जयते" इसी से लिया गया है।

कथो उपनिषद	मृत्यु की अवधारणा पर नचिकेता और यम के बीच का संवाद।
एसो उपनिषद	यह सृष्टि से संबंधित है
बृहदारण्यक उपनिषद	*(लेखक-याज्ञवल्क्य)* यह आत्माओं के पुनर्जन्म से संबंधित है।
केनो उपनिषद	उमा या पार्वती के बारे में बात करते हैं।
स्वेतास उपनिषद	सर्वप्रथम भगवान शिव को परिभाषित करता है।
जबला उपनिषद	*4 आश्रम (संन्यास)*

छान्दोग्य उपनिषद: - इसमें कृष्ण के बालावस्था के बारे में विस्तार से बताया गया है। यह स्पष्ट रूप से पहले तीन आश्रमों को संदर्भित करता है और विवाह के प्रकारों पर चर्चा करता है।

1. **अनुलोम विवाह** -पुरुष द्वारा अपने वर्ण या निचले वर्ण में विवाह करना
2. **प्रतिलोम विवाह** -कन्या/स्त्री का विवाह उसके अपने वर्ण से निचले वर्ण में विवाह होना

❖ परवर्ती उपनिषद जैसे "कथा" और "स्वेतसवतार" काव्य रूप में लिखे गए हैं।

स्मृति साहित्य

❖ स्मृति पारंपरिक ज्ञान है और सम्पूर्ण वैदिकोत्तर साहित्य की संज्ञा के तौर पर इस शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। स्मृति साहित्य में आम तौर पर निम्नलिखित अतिव्यापी विषय शामिल होते हैं:-

1. वेदांत: -

❖ वेदांत का शाब्दिक अर्थ है "वेदों का अंत". वे वेदों के अंतिम उद्देश्य को प्रकट करते हैं। वे बलिदान और अनुष्ठानिक समारोहों की निंदा करते हैं और वैदिक काल के अंतिम चरण को निरूपित करते हैं।

2. *वेदांग:* -

❖ शब्द वेदांग' का अर्थ है वेदों का अंग'। वेद के बाद वैदिक अध्ययन की कुछ शाखाओं को वेदों का सहायक मानते हैं।

❖ हालाँकि, इन्हें श्रुति साहित्य की श्रेणी में रखना उचित नहीं है क्योंकि इनका निर्माण मानव द्वारा किया गया है न कि ईश्वर द्वारा। इन्हें सूत्र साहित्य की संज्ञा दी जाती है।

❖ सूत्र बहुत ही संक्षेप में दिए गए कथन हैं जिनका उपयोग विभिन्न अभिव्यक्ति और विचारों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है।

1. शिक्षा (ध्वनि-विज्ञान)	*सबसे पुराना वेदांग जो उच्चारण से संबंधित है।*
2. कल्प (अनुष्ठानिक विज्ञान)	*भारतीय कानून का आधार:* - 1. *धर्मशास्त्र* - *घरेलू समारोहों से संबंधित है।* 2. *सुल्वसूत्र- पुनर्वसुनी (ज्यामिति) से संबंधित है।* 3. *श्रुतसूत्र- सामाजिक समारोहों (विवाह, जन्म) से संबंधित हैं।*
3. ज्योतिष (खगोल विज्ञान)	*ग्रहों की चाल का अध्ययन और जीवन में घटनाओं को समझना इसमें आता है।*
4. व्याकरण (व्याकरण)	*पाणिनि द्वारा लिखित।*
5. निरुक्त (व्युत्पत्ति)	*यह शब्दों की उत्पत्ति का अध्ययन है।*
6. छंदा (मेट्रिक्स)	*यह पाठ से संबंधित है।*

3. पुराण: -

- शब्द पुराण' का शाब्दिक अर्थ है' पुराना '।
- वे परवर्ती काल के (लगभग 4 ठी शताब्दी) धार्मिक साहित्य थे, लेकिन इनमें अतीत की परंपराओं के बारे में स्पष्ट परिभाषित धारणा है।

- वे हिंदू धार्मिक प्रथाओं के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालते हैं।
- पुराणों को आगे 18 महापुराणों में विभाजित किया गया है।
- महापुराणों में 5 विषय हैं -
- 1) सर्ग: - ब्रह्मांड की मूल रचना,
- २) प्रतिसर्ग: - विनाश और सृजन की आवधिक प्रक्रिया,
- 3) मन्वंतर: - विभिन्न युग या लौकिक चक्र,
- 4) सूर्य वंश और चंद्र वंश: - देवताओं और ऋषियों के सूर्य और चंद्र राजवंशों का इतिहास,
- 5) वंशानुचरित: - राजाओं की वंशावली।
- कुछ पुराण ऐतिहासिक राजवंशों (जैसे हर्यक, शिशुनाग, नंद, मौर्य और शुंग - गुप्त काल तक) पर उपयोगी जानकारी प्रदान करते हैं।
- पुराणों में ऐतिहासिक भूगोल, जैसे पहाड़, नदी आदि का विस्तृत विवरण है

अठारह पुराण	
1) ब्रह्म पुराण	9) गरुड़ पुराण
2) शिव पुराण	10) विष्णु पुराण।
3) श्रीमद् भागवत पुराण	11) पद्म पुराण
4) नारद पुराण	12) अग्नि पुराण
5) भाव पुराण	13) मार्कंडेय पुराण
6) वाराह पुराण	14) लिंग पुराण
7) ब्रह्म वैवर्त पुराण	15) वामन पुराण
8) सूर्य पुराण	16) शाण्ड पुराण
	17) मत्स्य पुराण
	18) ब्रह्माण्ड पुराण

विशेष टिप्पणीया

आस्तिक – दर्शन

- **उपवेद:** इन्हें सहायक वेदों के रूप में भी जाना जाता है. वे चिकित्सा, वास्तुकला, तीरंदाजी और विभिन्न कला और शिल्प से संबंधित हैं। ये आंशिक रूप से मूल वैदिक ग्रंथों से प्राप्त हुए थे और पारंपरिक रूप से एक या दूसरे वेद से जुड़े थे।
- **उपंग:** वे ग्रंथों के किसी भी संग्रह के लिए एक सामान्य नाम हैं, हालांकि पारंपरिक रूप से न्याय' और मीमांसा' की दार्शनिक प्रणाली तक ही सीमित हैं - धर्म सूत्र' पुराण' और तंत्र'

दर्शन	शिक्षक	शिक्षा
वैशेषिक	कनाद	भौतिकी, विशेष रूप से परमाणु सिद्धांत
न्याय	गौतम	तर्क और ज्ञान-मीमांसा
संख्या	कपिल मुनि	भौतिकी और तत्वमीमांसा
योग	पतंजलि	साधना (आध्यात्मिक अभ्यास)
मीमांसा	जैमिनी	हेर्मेनेयुटिक्स और अनुष्ठान
वेदांत	व्यास	तत्त्वमीमांसा

- **तंत्र:** तंत्र का सम्बन्ध शाक्त या शैव संप्रदायों के साहित्य से हैं और बौद्ध विरोधी विद्वानों से भी जुड़े हैं.
- **आगम:** ये हिंदुओं के वैष्णव, शैव और शाक्त जैसे संप्रदाय के धर्मग्रंथ हैं।
- **महाकाव्य:** कुछ इतिहासकार उत्तर वैदिक काल को महाकाव्य की अवधि मानते हैं। महाभारत और रामायण इस काल के दो महान महाकाव्य हैं।

आर्य

ऋग्वेदिक आर्यों का सामाजिक जीवन

- ऋग वैदिक समाज एक आदिवासी समाज था और इसके लोग अर्ध-खानाबदोश जीवन जीते थे।
- आर्य जनजातियों को जन कहा जाता था। जन शब्द ऋग्वेद में लगभग 275 स्थानों पर आया है, और जनपद या क्षेत्र शब्द का उपयोग एक बार भी नहीं किया गया है।
- गोपति की उपाधि वंशानुगत नहीं थी और उन्हें कबीले के लोगों में से ही चुना जाता था।
- समाज जाति के आधार पर विभाजित नहीं था और यहां तक कि राजन, पुरोहित, कारीगर, आदि भी कबीले का हिस्सा थे।
- व्यवसाय जन्म पर आधारित नहीं था।

मुखिया (राजन)। → *गोपती या गोप (गायों का रक्षक)*

मुखिया रानी → *महिषी*

↓

एक परिवार के सदस्य अलग-अलग व्यवसाय अपना सकते हैं। जैसा कि ऋग्वेदिक छंद में कहा गया है-

"मैं एक कवि हूँ, मेरे पिता एक चिकित्सक हैं, और मेरी माँ पत्थर पर अनाज पीसती हैं। विभिन्न योजनाओं के साथ, धन कमाने के लिए प्रयासरत हो हम मवेशियों की तरह अपनी इच्छाओं का पालन करते हैं। "

- वर्ण या रंग वैदिक और गैर-वैदिक लोगों के बीच प्रारंभिक भेदभाव का आधार था-
  - वैदिक लोग गोरे थे।
  - गैर-वैदिक लोग रंग में काले थे और एक अलग भाषा बोलते थे।
- दास और दस्यु, जिन्हें आर्यों द्वारा जीत लिया गया था, दास और शूद्र के रूप में जाने जाते थे।
- सामाजिक रूप से संगठित "वर्ण व्यवस्था" प्रचलित नहीं थी।

↓

समाज में जनजातीय तत्व अधिक मजबूत थे।

(ऋग्वेदीय समाज को अभी भी पूरी तरह से समतावादी समाज नहीं माना जा सकता है क्योंकि सामाजिक स्तरीकरण श्रम और लिंग के विभाजन पर आधारित था।)

समाज स्वभावतः पितृसत्तात्मक था।

महिलाओं की भी समाज में महत्वपूर्ण स्थिति थी क्योंकि वे शिक्षित थीं और सभा में उनकी पहुंच थी। विधाता की सभाओं में महिलाएं भाग लिया करती थी। लड़कियां अपने जीवन साथी चुनने के लिए स्वतंत्र थीं।

❖ कुल *(परिवार)* बुनियादी सामाजिक इकाई थी और कुलप

↓

परिवार का मुखिया था

❖ परिवार एक बड़े समूह का हिस्सा था, जिसे विज़ या कबीला कहा जाता था।
❖ ऋग्वेद में, बेटियों के लिए किसी इच्छा का वर्णन नहीं किया गया है, हालांकि बच्चों और मवेशियों की इच्छा का स्तोत्रो में बार-बार उल्लेख है।
❖ ऋग्वेद में बाल विवाह, सती या पर्दा प्रथा के उदाहरण नहीं हैं। देवर विवाह *(पति की मृत्यु पर पति के छोटे भाई से विवाह)* और विधवा पुनर्विवाह के कुछ उदाहरण मिलते हैं।

ऋग वैदिक अर्थव्यवस्था: -

ऋग वैदिक समाज → *पशुपालक समाज* *(कृषि द्वितीयक थी)*

↓

मवेशी पालन उनकी प्रमुख गतिविधि थी।

↓

संपत्ति का मुख्य पैमाना मवेशी थे।

↓

एक धनी व्यक्ति को गोमत के नाम से जाना जाता था *(वह जो कई मवेशियों का मालिक था)*

❖ *मुद्रा की इकाई*

↓

'निष्खा' → *सोने की बनी हुई थी*

❖ *विनिमय का प्रारू*

'वस्तु विनिमय प्रणाली'

❖ आर्य एक स्थान पर व्यवस्थित जीवन नहीं जीते थे। उन्होंने कई जानवरों का इस्तेमाल किया; घोड़े ने उनके जीवन में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
❖ कोई नियमित राजस्व प्रणाली नहीं थी।

↓

राज्य को प्रजा के द्वारा दिए गए स्वैच्छिक भेंट *(बली)* और एक युद्ध में जीता गया प्रतिफल *(भाग)* द्वारा पोषित किया जाता था।
(पुरोहित अपनी कर्मकांड सेवाओं के लिए दान (उपहार) और दक्षिणा (यज्ञ से प्राप्त) प्राप्त करते थे)

❖ ऋग्वेद में युद्ध के लिए शब्द है-

↓

गाविष्टि, गवेषण, गोषु,या गव्यात *(गायों की खोज)*

❖ शब्द अयस, तांबा या कांस्य के लिए प्रयुक्त, होता था जो दर्शाता है, है कि धातु कार्य ज्ञात था। उन्होंने लोहे की तकनीक शब्द का इस्तेमाल नहीं किया।

- ऋग वैदिक समाज कृषि के बेहतर ज्ञान के लिए जाना जाता है। ऋग्वेद के आरंभिक भाग में जोतदार का उल्लेख मिलता है। इंद्र का वर्णन
  - उर्वराजीत (उपजाऊ क्षेत्रों के विजेता) के रूप में भी किया गया है।
- चावल, जौ, सेम और तिल का उत्पादन किया जाता था। लोगों को बुवाई, कटाई और फसलों की गहाई का ज्ञान था।
- गाय मूल्य की माप थी और जिसे गोधन कहा जाता था।

❖ ऋग वैदिक धर्म: -

- प्रारंभिक वैदिक युग में कोई मूर्ति पूजा नहीं थी।
- गाय को -
  - अघ्न्या (मारा नहीं जाने वाला) माना जाता था
- गायों को पवित्र माना जाता था इसलिए इसका मांस प्रतिबंधित था।
- वैदिक देवताओं को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था -
  1. **स्थलीय** (**पृथ्वीस्थान**)
     - पृथ्वी, अग्नि, सोम, बृहस्पति और नदियाँ
  2. एरियल या इंटरमीडिएट (अंतरिक्षस्थान)
     - इंद्र, वायु-वात, रुद्र, आपम-नपत, प्रुजन्य, और अपाह (जल)
  3. **आकाशीय** (**द्युस्थान**)
     - द्यौस, वरुण, सूर्य, मित्र, विष्णु, पूषन, सावित्री, आदित्य, उषा, और अश्विन

ऋग्वेद
- प्रकृतिवादी बहुदेववाद प्रकट करता है
- हवा, बारिश, पानी, गरज आदि जैसे प्राकृतिक बलों की पूजा।




❖ वैदिक देवता

1. इंद्र-

- * आर्यों के सबसे महान देवता
- पुरंधर (किलों को तोड़ने वाला)
- के रूप में जाने जाते थे:-
  - मघवन (विपुल)
  - वृतारन (वृत का वध करने वाला)



2. अग्नि-

- दूसरे सबसे महत्वपूर्ण देवता; अग्नि के देवता।

- धरती और स्वर्ग के पुत्र। अग्नि को पृथ्वी और स्वर्ग के बीच दूत के रूप में महत्व दिया गया था।
- अग्नि ही ऐसे देवता माने जाते थे जो सभी श्रेणी के देवताओं में एकमात्र उपस्थित थे ।
- देवताओं और पुरुषों के बीच मध्यस्थ।

3. *वरुण-*

- तीसरे सबसे महत्वपूर्ण देवता; पानी के देवता।



- सर्वोच्च ब्रह्मांडीय और नैतिक शासक।
- नैतिक रूप से, वह सभी ऋग्वेदिक देवताओं में सर्वोच्च थे।

4. *सोम-*

- पौधों के देवता / देवताओं के राजा / ब्राह्मणों के विशेष देवता।
- कवियों को मंत्र (स्तोत्र) लिखने के लिए प्रेरित करने वाले देवता के रूप में माने जाते थे।
- आर्य लोग हिमालय *(मुंजावत)* को सोमा पौधे के स्रोत के रूप में जानते थे।

5. *रूद्र-*

- भगवान, जिनके तीर से बीमारियाँ आईं/
- पहाड़ों में रहते थे, और जड़ी बूटियों के संरक्षक।
- ग्रीक देवता अपोलो से मिलते जुलते थे और और इन्हें आदि शिव के रूप में भी जाना जाता था।

6. *यम-*

- मृत्यु के देवता।

7. *पूषण-*

- जंगली चरवाहों, मवेशियों और रास्तों के देवता।
- दिन से रात का परिवर्तन और इसके विपरीत करने वाले देवता।

8. **सूर्य** - द्योस का पुत्र, जो प्रकाश फैलाता था। 9. ***अदिति*** - (***देवताओं की माता***)

- अनंत काल की देवी
- बुराई, हानि और बीमारी से मुक्ति प्रदान करने वाली देवी।

10. *अर्ध-देवता-*

- अर्ध देवता शब्द का प्रयोग उन देवताओं को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जो कभी मानव थे और बाद में देवता *(देव)* बन गए। जैसे-

1. *गरुड़ (विष्णु की दिव्य सवारी)*
2. *गंधर्व (दिव्य संगीतकार)*
3. *अप्सरा (देवताओं की गृहस्वामिनीयां)*
4. *आर्यमान (संविदा और विवाह का संरक्षक)*
5. *विश्वदेव (मध्यवर्ती देवता गण)*

- पूजा पाठ, वैदिक मंत्रों का उच्चारण और यज्ञ पूजा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था।

ऋग्वेदिक प्रशासन

- मुखिया कबीले या जन के रक्षक थे।
- ऋग्वेदिक काल में राजा का पद केवल वंशानुगत नहीं था। विधानसभा जिन्हें समिति कहा जाता था; के द्वारा भी चुनाव के कुछ उल्लेख हैं । *(उपयुक्त राजा के चयन का विकल्प)*
- मुखिया के पास असीमित शक्तियां नहीं थीं; उन्हें कबीले की सभाओं पर निर्भर रहना पड़ता था।
- कबीला एक लोकतांत्रिक व्यवस्था था।
- कोई वास्तविक राज्य क्षेत्र या संरचना मौजूद नहीं थी।
- राजन को जनस्य गोप के नाम से भी जाना जाता था।
- राजा के देवत्व के भाव का कोई उल्लेख नहीं मिलता ।

- मुख्य कर्तव्य था- कबीले और पशु धन का संरक्षण।
- राजा को अपने कबीले का रक्षक कहा जाता था। वह अपने मवेशियों की रक्षा करते थे, कबीले के लिए युद्ध लड़ते थे और कबीले की ओर से देवताओं की प्रार्थना भी करते थे।
- सभा में बहस को नियंत्रित करने के लिए नियम थे
- व्रजपति नामक अधिकारी को चरागाह भूमि पर अधिकार प्राप्त था,। उन्होंने कुलप नामक परिवप्रमुखों मुखियों को, या लड़ने वाले मुखियों का नेतृत्व करता था।

ऋग्वेदिक काल के महत्वपूर्ण शब्द

शब्द	***अर्थ***
सभा	ब्राहमणों और बुजुर्गों की सभा
समिति	*आम लोगो की समिति, जिसकी अध्यक्षता राजन करता था*
विधाता	विभिन्न कार्यों के लिए कबीले की सभा
गण	उच्चतम सलाहकारी निकाय
ग्राम (ग्राम)	ग्रामणी का समूह
विज़	सामान्य रूप से कबीले / लोग
राजन	देश का प्रमुख
श्रीनि	दरांती
गोधुली संगावा	समय का मापन (सांझ)
गवयुती	दूरी की माप
गोजित	गायों का विजेता/नायक
क्षेत्र	खेती का मैदान
दुहित्री	बेटी जो दूध दोहती है
गोत्र	रक्त संबंधी इकाइयाँ
सोमा / सुरा	मादक द्रव्य
घृता	मक्खन
धन्य	अनाज
गौरी	ग्वाला भैंस
उर्वरा	उपजाऊ खेत

गोघ्न	अतिथि; वह जिसको मवेशियों से प्राप्त उत्पादों के द्वारा भोजन कराया जाता था।

- ऋग वैदिक काल में महिलाओं ने सभा और विधाता में भाग लिया।
- शुरुआत में ग्रामणी एक छोटी कबीलयाइ युद्धक इकाई का मुखिया होता था। समय के दौरान जब इकाईयां बस गई, ग्रामनी गांव के मुखिया बन गए, और व्रजपति के समान हो गए ।
- ऋग्वेद के समय जिन दो पुजारियों ने प्रमुख भूमिका निभाई थी, वे वशिष्ठ और विश्वामित्र थे।
- लड़कियों का विवाह आम तौर पर यौनावस्था में पहुंचने के बाद *(16* और *17* की उम्र के बीच*)* के बाद किया जाता था।
- घोषा, विश्ववारा और अपाला जैसी शिक्षित महिलाओं ने अपने दम पर यज्ञ कार्य किया।
- **परुष्णी *(रावी)* नदी पर *10* राजाओं की लड़ाई*:***

दस राजाओं की लड़ाई *(दशरजना)*: -

यह भरत कबीले के मुखिया सुदास, दिवोदास का पोता *(लड़ाई के विजेता)* एक तरफ, और दूसरी तरफ प्रसिद्ध पांच कबीलो *(पंच-जन)* अर्थात् यदु, तुर्वशा, पुरु, अनु, और द्रुहु के सहित दस अन्य कबीले, के बीच लड़ा गया था।

- बाद में, भरत कबीले ने पुरु कबीले के साथ हाथ मिला कूरु कबीले का गठन किया। भारतवर्ष का नाम भरत कबीले के नाम पर रखा गया है जिसका ऋग्वेद में प्रथम उल्लेख है।

उत्तर वैदिक काल

(उत्तर वैदिक काल आमतौर पर 1000 ई पू 600 ई पू के बीच देखा गया)

उत्तर वैदिक काल में वैदिक सभ्यता के सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में कुछ बदलाव हुए। इस अवधि के दौरान लगभग पूरे उत्तर भारत में बस्तियां बन गईकिया। सभ्यता का केंद्र

सरस्वती से गंगा में स्थानांतरित हो गया

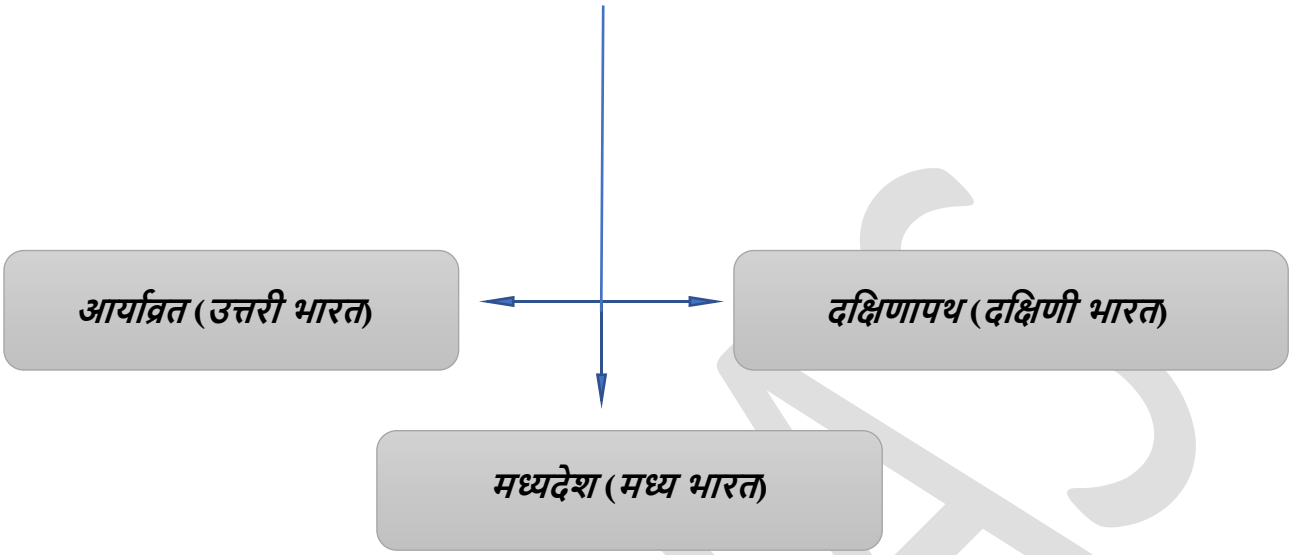
भारत की पवित्र नदी का गर्वित स्थान

- विज़ का क्रमिक विस्तार और समेकन हुआ। ऋग वैदिक काल के पहले से ज्ञात जन जैसे भरत, पुरु, त्रितुसी, और के तुर्वस धीरे-धीरे अन्य जनों के साथ विलय कर दृश्य से गायब हो गए थे।
- उत्तर वैदिक ग्रंथों का मुख्य भौगोलिक क्षेत्र कुरु-पांचला क्षेत्र से मेल खाता है, जिसमें भारत-गंगा भाग और ऊपरी गंगा घाटी शामिल थे।
- *पूर्व की ओर लोगों का विस्तार*

  शतपथ ब्राह्मण में दिया गया है

यह बताता हैं कि कैसे राजा विदेही माधव वैदिक संस्कृति की भूमि सरस्वती क्षेत्र से प्रवासीत होकर, सदानीरा (आधुनिक गंडक नदी) , कोसल की पूर्वी सीमा को पार करके विदेह (आधुनिक तिरहुत) की भूमि पर आ कर बस गए। ग्रंथ तीन राज्यों, कोसल, कासी और विदेह के विकास की व्याख्या भी करते हैं।

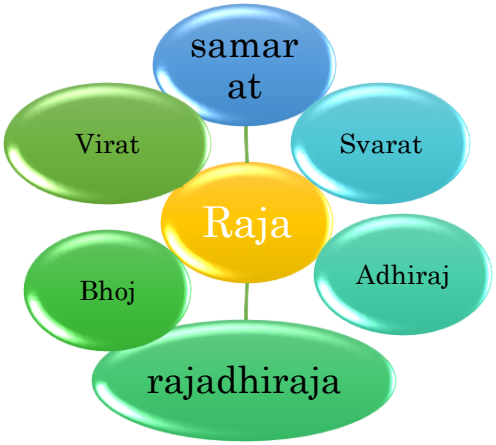
उत्तर वैदिक युग भारत के 3 प्रभागों को बताता है -



- इस अवधि में 'राष्ट्र' शब्द पहली बार सामने आया।
- युद्ध अब गायों के लिए नहीं, बल्कि प्रदेशों के लिए लड़े जाते थे। (युद्ध के उद्देश्य में धीरे-धीरे परिवर्तन हुए)।
- उत्तर वैदिक काल में भी, राजा के पास एक स्थायी सेना नहीं होती थी और युद्ध के समय में कबीलयाई इकाइयों को जुटाया जाता था।

यज्ञ अनुष्ठानों के द्वारा राजा के प्रभाव को मजबूत किया जाता गया

1. **अश्वमेध**- जिस क्षेत्र में शाही घोड़ा निर्बाध रूप गुजर जाता था, उस क्षेत्र पर अश्वमेध यज्ञ करने वाले राजा का निर्विवाद नियंत्रण हो जाता था।
2. **राजसूय**- जो शाही अभिषेक था और राजा को सर्वोच्च शक्ति प्रदान करता था।
3. **वाजपेय**- यह एक रथ दौड़ थी जिसमें शाही रथ अन्य सभी रक्त संबंधियों के खिलाफ जीतने के लिए बनाया गया था।
4. राजा को विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न नामों से संबोधित किया गया था: -



उत्तर वैदिक राजनीति और प्रशासन-

- कबीलयाई प्राधिकरण प्रादेशिक हो गये। राष्ट्र, जिसका अर्थ क्षेत्र था पहली बार इस अवधि में सामने आया।
- उत्तर वैदिक काल में, विधाता पूरी तरह से गायब हो गई।
- सभा और समिति जारी रही, लेकिन उनका रूप बदल गया।
- महिलाओं को अब सभा में बैठने की अनुमति नहीं थी, और सभा में अब कुलीनो और ब्राह्मणों का वर्चस्व हो गया।
- कई जन या कबीलो को मिलाकर जनपद बना दिए गए।
- इसलिए राज्य के आकार में वृद्धि के साथ शाही शक्ति में वृद्धि हुई थी। व्यापक राज्यों के गठन ने राजा को और अधिक शक्तिशाली बना दिया।
- अथर्ववेद एकराट को सर्वोपरि संप्रभु मानता है।
- राज्य संचालन के लिए कुछ लोकतांत्रिक तत्व प्रबल थे। ये थे:

1) **अपने राजा को चुनने में लोगों का अधिकार**
2) **राजा के अधिकारों और कर्तव्यों पर लगाई गई शर्तें।**
3) **राजा की निरंकुशता की जाँच करने के लिए लोगों की सभाएँ, सभा और समिति।**
4) **राजा की अपने मंत्रियों की परिषद पर निर्भरता**

वाजसनेही संहिता में उल्लेख है कि गलत सदस्यों को 'फटकार' लगाया जाता था। सभा न्यायालय के रूप में भी कार्य करती थी। यह कहा जाता है कि, "जो सभा में भाग लेता है वह न्यायालय में बैठकर धर्म न्यायपूर्ण निर्णय देता है"।

नए अधिकारी: → ***उत्तर वैदिक काल के दौरान।***

- ***सुत (सारथी)***
- ***संग्रहीत्री (कोषाध्यक्ष)***
- ***भगदुगा (करों का संग्रहकर्ता)***
- ***ग्रामिनी (गाँव का मुखिया)***
- ***स्तपथी (मुख्य न्यायाधीश)***
- ***तक्षाण (बढ़ई)***
- ***क्षत्री (राजा के महल का बड़ा अधिकारी)***

- उत्तर वैदिक काल के दौरान राजा, संग्रीत्री नामक अधिकारी की नियुक्ति करों एवं भेंटों के संग्रह के लिए करता था।
- महिलाओं की स्थिति उत्तर वैदिक काल से बिगड़ने लगी और महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक भूमिकाओं में कमी कर उन्हें घरों में रहने के लिए मजबूर कर दिया गया।
- बली जो एक स्वैच्छिक भेंट हुआ करती थी, उसे अनिवार्य कर दिया गया।

उत्तर वैदिक अर्थव्यवस्था: -

उत्तर वैदिक संस्कृति → ***के रूप में भी जाना जाता*** ***है***



चित्रित धूसर मृदभांड - लौह चरण संस्कृति

उस चरण के दौरान एक विशेष प्रकार के मिट्टी के बर्तनों (चित्रित धूसर मृदभांड) का उपयोग किया जाता था।

- ***उत्तर वैदिक काल में आर्य संस्कृति के विस्तार का मुख्य कारक लोहे के प्रयोग की शुरुआत थी, जो लगभग 1000 ईसा पूर्व शुरू हुआ था।***
- ***उत्तर वैदिक लोग चार प्रकार के मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग करते थे:***
  1. ***चित्रित धूसर मृदभांड***
  2. ***काली तथा लाल मृदभांड***
  3. ***चिकनी काली मृदभांड***
  4. ***लाल मृदभांड***



- शायद बहुत ही अच्छे लोहार हुआ करते थे, क्योंकि चित्रित धूसर मृदभांड वाली जगहों पर पर बहुत से तांबे की वस्तुए मिली हैं।
- आर्य एक आसान जीवन शैली जीते थे, पालतू जानवर और खेती के अनाज का बड़े पैमाने पर (बिना किसी उपचार के भंडारण) फसल करते थे ।



- समाज काफी हद तक ग्रामीण था। हालांकि, शहरीकरण की शुरुआत के साक्ष्य मिले हैं।
- रकम उधार देना प्रचलन में था (अमीर व्यापारियों तक सीमित)।
- विशिष्ट वजन और माप-इकाइयों भी प्रयोग की जाती थी ।
- सिक्कों के प्रयोग का कोई प्रमाण नहीं है।
- लोगों ने कांच निर्माण का भी ज्ञान प्राप्त किया था।
- लौहार, बढ़ई, बुनकर, जौहरी, खरीदार और कुम्हार जैसे नए कलाकार और शिल्पकार भी उभरे ।
- श्रमिकनिकाय बैंकरों, फाइनेंसरों और ट्रस्टियों के रूप में भी कार्य करते थे / आम तौर पर, इन कार्यों को व्यापारियों की एक अलग श्रेणी द्वारा किया जाता था, जिन्हें 'श्रेष्ठि के रूप में जाना जाता था (वर्तमान में उत्तर भारत के सेठ और दक्षिण भारत के चेट्टियाँ और चेट्टियार)।
- जीविका के पशुपालन और अर्ध-घुमंतू रूप छूट गए। कृषि आजीविका का प्राथमिक स्रोत बन गई, और जीवन व्यवस्थित और गतिहीन हो गया। विविध कलाओं और शिल्पों से पूरित वैदिक लोग ऊपरी गंगा के मैदानों में स्थायी रूप से बस गए।
- मैदानों में रहने वाले किसानों ने खुद को बनाए रखने के लिए पर्याप्त उत्पादन किया, और वे अपनी उपज का एक मामूली हिस्सा राजाओं और पुजारियों के लिए भी संग्रहीत करते थे

उत्तर वैदिक समाज: -

ऋग वैदिक समाज से सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन सामाजिक भेदभाव का उदय और वृद्धि था। *(वर्ण-आश्रम-धर्म समाज)*

Units of currency

Niska and **satamana**

वर्ण व्यवस्था: -

बाद में वैदिक समाज को चार वर्णों में विभाजित किया गया। *(चतुर्वर्ण व्यवस्था)*



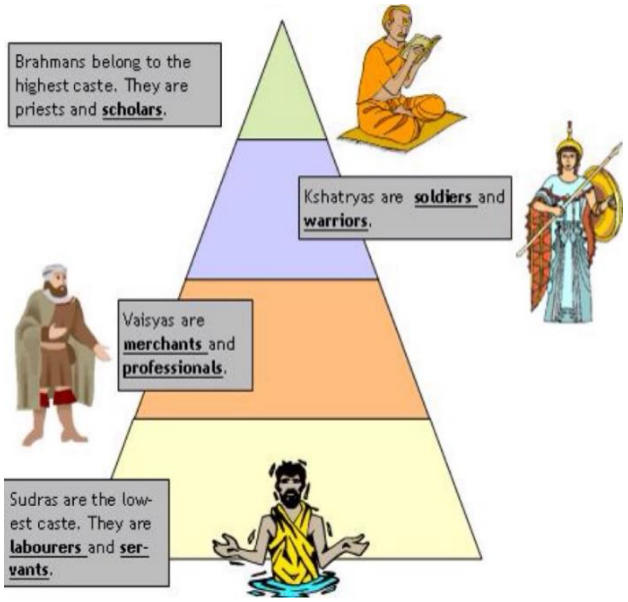
1. **ब्राह्मण**
2. **राजन्य या क्षत्रिय**
3. **वैश्य**
4. **शूद्र**

ब्राह्मण शिक्षा और आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान करते थे। वे किसी भी समाज के दृष्टिकोण और मूल्यों को निर्धारित करते थे। उनकी विशेषताएं थी-

- वेदों का अध्ययन और अध्यापन करना।
- खासतौर पर क्षत्रियों को मार्गदर्शन देना।
- यज्ञ और धार्मिक अनुष्ठानों को करना, और दूसरों को इस तरह के अनुष्ठान करने के तरीके सिखाना
- ब्रह्म *(आत्मा, स्वयं, ईश्वर)* को जानना।
- सभी आदर्श गुणों को विकसित करना, विशेष रूप से ईमानदारी, अखंडता, स्वच्छता, पवित्रता, तपस्या, ज्ञान आदि।

कभी-कभी वर्चस्व के लिए, ब्राह्मणों के राजवंशों के साथ संघर्ष भी हुए। उत्तर वैदिक काल के अंत में इस बात पर जोर दिया जाने लगा कि बाकी समाज पर शासन करने के लिए दोनों को सहयोग होना चाहिए।

- **राजन्य या क्षत्रिय** का कर्तव्य था समाज की रक्षा करना , तथा शारीरिक एवं चारित्रिक मजबूती रखना। इनकी विशेषताएं हैं :
- नागरिकों, विशेषकर महिलाओं, बच्चों, गायों, ब्राह्मणों और बुजुर्गों को किसी भी तरह के नुकसान से बचाना।
- शक्ति, शिष्टता और उदारता जैसे महान गुणों का विकास करना।
- युद्ध में सर्वप्रथम शामिल होना और युद्ध के मैदान से कभी भी पीठ दिखाकर नहीं भागना।
- कर *(केवल वैश्यों से)* वसूल करना और किसी भी परिस्थिति में दान स्वीकार नहीं करना।
- अपने राज्य में कमियों की जिम्मेदारी लेना।
- अपराध और अधर्म से हर संभव निपटना।



वैश्यों में आम लोग थे, और उन्हें कृषि, मवेशी प्रजनन आदि जैसे कार्य सौंपे गए थे, उनमें से कुछ ने कारीगरों के रूप में भी काम किया। उत्तर वैदिक काल में केवल वैश्य ही कर देते थे हैं। उनकी विशेषताएं हैं -

- नैतिक रूप से व्यापार करना।
- पशुओं *(विशेष रूप से गायों)*, और भूमि की रक्षा करना।
- धन और समृद्धि करना।
- श्रमिकों को प्रचुर भोजन, कपड़े आदि देना।

शूद्र समाज का एकमात्र खंड है जिसे उत्तर वैदिक काल के दौरान दूसरे के रोजगार को स्वीकार करने की अनुमति थी *(अन्य वर्ण व्यावसायिक रूप से और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर थे)*। उनकी विशेषताएं हैं-

- दूसरों को सेवा प्रदान करना।
- अपने काम पर गर्व करना और वफादार होना।
- सामान्य नैतिक सिद्धांतों *(जैसे चोरी न करना)* का पालन करना, ।

*सभी तीन उच्चतर **वर्ण** की साझा विशेषता थी; वे वैदिक मंत्रों के अनुसार पवित्र धागे के साथ उपनयन या अभिषेक के हकदार थे। चौथा वर्ण (शूद्र) उपनयन से वंचित था।*

वर्ण व्यवस्था में महिलाओं को भी शूद्र माना गया था । महिलाओं और शूद्रों दोनों को वेदों और अन्य साहित्य का अध्ययन करने की अनुमति नहीं थी। *(वेदों का अध्ययन उच्च वर्ग के लोग ही कर सकते थे)*

अछूत: - *(जाति- हीन)*

बाद के काल में पुजारियों ने कुछ लोगों को अछूत के रूप में वर्गीकृत किया। उनमें शामिल थे-

- कुछ शिल्प व्यक्ति *(जैसे तीर बनाने वाला)*
- शिकारी और इकट्ठा करने वाले
- जिन लोगों ने दफनाने और दाह संस्कार करने में मदद की
- मुर्दाखोर

- *पुजारियों ने कहा कि इन समूहों के साथ संपर्क प्रदूषणकारी था।*

मूल वर्ण प्रणाली: -

सहकारिता के आधार पर, ईश्वर के लिए पारस्परिक सेवा, और अधिकारों और जिम्मेदारियों पर आधारित थी।
उदाहरण

यद्यपि योद्धाओं *(क्षत्रिय)* के पास बहुत धन और शक्ति थी, लेकिन उनसे पहले युद्ध में शामिल होने की उम्मीद रखी जाती थी। विद्वान, ब्राह्मण वर्ग को और भी अधिक सम्मान दिया गया, लेकिन उन्हें मन और इंद्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रखने की आवश्यकता थी।

उत्तर वैदिक काल में, वर्ण- व्यवसाय पर आधारित होने के बजाय जन्म पर आधारित हो गया /

गोत्र प्रणाली: -

- गोत्र उत्तर वैदिक संस्कृति में दिखाई दिए।

अर्थात

- गोत्र नाम था वह स्थान पूरे कबीले के मवेशी रखे जाते थे।

समय के दौरान इसका मतलब था: - एक ही पूर्वज के वंशज।

ऐसा माना जाता है कि असंबंधित लोगों से संबंध बनाते समय गोत्र सामाजिक-राजनीतिक संबंधों को व्यापक बनाने के लिए एक तंत्र के रूप में कार्य करते हैं,।

- लोगों ने गोत्र बहिर्गमन का अभ्यास शुरू किया।
- एक ही गोत्र से संबंधित व्यक्तियों या एक ही पूर्वज के वंशजों के बीच कोई विवाह नहीं हो सकता है।

आश्रम प्रणाली:

प्रारंभिक वैदिक काल में आश्रम या जीवन के चार चरण अच्छी तरह से स्थापित नहीं थे। उत्तर वैदिक काल में जीवनकाल के चार चरण अच्छी तरह से स्थापित हुए और ये *4* आश्रम थे: -

1. ब्रह्मचर्य आश्रम: पहले *25* वर्ष छात्र जीवन के लिए निर्धारित किए गए थे।
2. गृहस्थ आश्रम: २५ से ५० वर्ष की आयु को परिवार रखने और सांसारिक कर्तव्यों जैसे बच्चों को जन्म देने और उनका पालन-पोषण करने के लिए रखा गया था।
3. वानप्रस्थ आश्रम: *50-75* वर्ष की आयु जंगलों में जीवन यापन तथा आंशिक सेवानिवृत्ति के लिए निर्धारित की गई थी।
4. सन्यास आश्रम: *75-100* वर्ष की अंतिम आयु दुनिया से पूर्ण सेवानिवृत्ति के लिए निर्धारित की गई थी।

प्रारंभिक वैदिक ग्रंथों में *4* आश्रमो का उल्लेख नहीं किया गया है।

जबाला उपनिषद में संन्यास आश्रम का उल्लेख है।

पुरुषार्थ- मानव अस्तित्व के लक्ष्य, अंत या उद्देश्य को बताता है। हिंदू धर्म के चार पुरुषार्थ है।	
1. धर्म-	धार्मिक, सामाजिक और नैतिक धार्मिकता।
2. अर्थ-	जीवन यापन के भौतिक और वित्तीय साधन
3. काम-	आनंद सहित कामुक सुख
4. मोक्ष-	स्वतंत्रता; या त्याग के साथ-साथ वैराग्य भी

उत्तर वैदिक युग धर्म

- उत्तर वैदिक संस्कृति यज्ञ के पंथ की केंद्रीयता पर टिकी हुई थी। यज्ञ का पंथ इस संस्कृति की आधारशिला था और इसके कई अनुष्ठान और सूत्र भी थे। *(सार्वजनिक और घरेलू दोनों)*
- यज्ञों की आवृत्ति और संख्या में वृद्धि हुई, जिसमें आम तौर पर बड़े पैमाने पर जानवरों की हत्या शामिल थी।
- ऋग्वेदिक देवताओं, इंद्र और अग्नि ने अपना पूर्व महत्व खो दिया।
- दूसरी ओर, प्रजापति, निर्माता, को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ।
- जानवरों के देवता रूद्र, उत्तर वैदिक काल में महत्वपूर्ण हो गए।
- भगवान विष्णु उन लोगों के पालक और संरक्षक के रूप में माने गए; जिन्होंने अब प्रारंभिक ऋग्वेद काल के अर्ध-खानाबदोश जीवन के बजाय एक वैवाहिक जीवन की शुरुआत की।
- वैदिक काल में मूर्तिपूजा के साक्ष्य मिलते हैं।
- जैसे-जैसे समाज ब्राह्मणों, क्षत्रिय, वैश्यों और शुद्रो जैसे सामाजिक वर्गों में विभाजित होता गया, कुछ सामाजिक वर्णों के अपने अनुसार देवता भी सामने आए।



ऐसा माना गया की भगवान पूषन मवेशियों की देखभाल करते थे

अब शूद्रों के देवता माने जाते हैं।

कुछ सामान्य अनुष्ठान निम्नलिखित थे: -

राजसूय:

इस यज्ञ ने राजा को सर्वोच्च शक्ति प्रदान की

वाजपेय:

यह एक रथ दौड़ थी जिसमें शाही रथ को परिजनों के खिलाफ दौड़ जीतना था। इसने राजा को एक सम्राट का दर्जा दिया।

गर्भधारण:

गर्भाधान संस्कार

अश्वमेध यज्ञ:

एक क्षेत्र पर निर्विवाद नियंत्रण

पुंसयाम:

पुरुष बच्चे के लिए अनुष्ठान

जातकर्म:

नवजात शिशु के गर्भनाल को काटने से पहले जन्म समारोह किया जाता था

उपनयन:

आठवें वर्ष में किया जाता था जिससे द्विज का दर्जा दिया गया

सीमान्तोपनयन:

गर्भ में बच्चे की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए

उत्तर वैदिक काल के अंत में, पुजारी वर्चस्व, पन्थ और यज्ञो के खिलाफ एक मजबूत प्रतिक्रिया शुरू हुई।

महिलाओं की स्थिति

- महिलाओं की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ। वे अभी भी पुरुषों की अपेक्षा नीच और अधीनस्थ मानी जाती थी।
- महिलाओं ने सभाओं में भाग लेने के अपने राजनीतिक अधिकारों को भी खो दिया।
- बाल विवाह आम हो गए थे।
- ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार एक बेटी को दुख का स्रोत बताया गया है। हालांकि, राज घराने की महिलाओं को कुछ विशेषाधिकार थे।

शादी:-

उत्तर वैदिक काल में आठ प्रकार के विवाह प्रचलित थे। लेकिन आम तौर पर केवल चार *(ब्राह्मण, दैव, अरसा और प्रजापति)* ही ब्रह्मणों के लिए स्वीकार्य थे। ये धार्मिक और स्थायी (अभेद्य) विवाह थे।

ब्रह्मा विवाह- वैदिक संस्कारों और अनुष्ठानों के साथ विधिवत रूप से अपने ही वर्ण में कन्या का विवाह करना।

- दैव विवाह*:* - यज्ञ कराने वाले पुजारी को दक्षिणा या दान के रूप में पिता अपनी पुत्री को विवाह कर देता था।
- अर्शविवाह*:* - कन्या के विवाह के साथ कन्या धन के रूप में एक गाय और बैल दिए जाते थे।
- प्रजापति विवाह*:* - बिना दहेज और कन्या धन के विवाह, इसमें अन्य अतिथि भी नहीं होते थे।
- गंधर्व विवाह*:* - दो पक्षों की सहमति से विवाह। इसका एक विशेष रूप स्वयंवर या आत्म-चुनाव था।

उत्तर वैदिक काल में अधिकारी	
पुरोहित	मुख्य पुजारी, जिसे कभी-कभी राष्ट्रगोप भी कहा जाता है
सेनानी	सेना के सर्वोच्च कमांडर
व्रजपति	चारागाह भूमि का प्रभारी अधिकारी
स्पास / डूटास	जासूस जो कभी-कभी संदेशवाहक के रूप में भी काम करते थे
जीवग्रीभा	पुलिस अधिकारी
मध्यमासी	विवादों का मध्यस्थ
सूत	सारथी और दरबारी मिस्त्री
भागदुघा	राजस्व संग्रहकर्ता
महिषी	मुख्य रानी
संग्रहीत्री	कोषाध्यक्ष